NCERT की नई पाठ्यपुस्तक दीपकम् पर आधारित

संजीव® रिफ्रेशर

संस्कृत दीपकम्

कक्षा-7 के विद्यार्थियों के लिए

लेखक : डॉ. जितेन्द्र अग्रवाल

मुख्य विशेषताएँ

1. पाठ-परिचय
2. मूल पाठ, अन्वय, कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद
3. पठित अवबोधनम्
4. पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्नोत्तर
5. पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
6. व्याकरण
7. रचनात्मक कार्य
   - चित्राधारित-वर्णनम्
   - अनुच्छेद/निबन्ध-लेखनम्
   - पत्र-लेखनम्
   - संवाद-लेखनम्
   - अपठित अवबोधनम्

₹ मूल्य : 270.00

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★★★★★★

वैधानिक चेतावनी

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को किसी भी रूप में फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, या किसी अन्य माध्यम से, या किसी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया या यांत्रिक में शामिल करना कॉपीराइट का उल्लंघन माना जायेगा।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

प्रथमः खण्डः—दीपकम्

1.	वन्दे भारतमातरम्	1
2.	नित्यं पिबामः सुभाषितरसम्	21
3.	मित्राय नमः	40
4.	न लभ्यते चेत् आम्लं द्राक्षाफलम्	56
5.	सेवा हि परमो धर्मः	70
6.	क्रीडाम वयं श्लोकान्त्याक्षरीम्	89
7.	ईशावास्यम् इदं सर्वम्	112
8.	हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः	134
9.	अन्नाद् भवन्ति भूतानि	154
10.	दशमः कः?	172
11.	द्वीपेषु रम्यः द्वीपोऽण्डमानः	187
12.	वीराङ्गना पन्नाधाया	206

द्वितीयः खण्डः—व्याकरण भागः

1.	वर्ण–मात्रा–विचारः	222
2.	सन्धि–प्रकरणम्	229
3.	कारक–प्रकरणम्	238
4.	शब्द–रूपाणि	249
5.	धातुरूपाणि	267
6.	अव्यय–ज्ञानम्	282
7.	उपसर्ग–ज्ञानम्	288
8.	प्रत्ययज्ञानम्	295
9.	संख्याज्ञानम् (संख्यावाचक–विशेषणपदानि)	307
10.	अशुद्धि–संशोधनम्	317
11.	अनुवाद–प्रकरणम्	327

तृतीयः खण्डः—रचना भागः

1.	चित्राधारित-वर्णनम्	341
2.	अनुच्छेद/निबन्ध-लेखनम्	349
3.	पत्र-लेखनम्	355
4.	संवाद-लेखनम्	366
5.	अपठित-अवबोधनम्	372
●	**परिशिष्ट भागः**	**379**
	1. विशेषणानि	379
	2. विलोम-पदानि	381
	3. पर्याय-पदानि	382
	4. व्यावहारिक-शब्दकोशः	383

प्रथमः खण्डः—दीपकम्

प्रथमः पाठः

1

वन्दे भारतमातरम्

(भारतमाता की वन्दना करता हूँ)

पाठ-परिचय

यह पाठ भारतमाता के सौंदर्य, गौरव और राष्ट्रीय ध्वज की विशेषताओं का सुंदर वर्णन करता है। भारतमाता के मस्तक पर हिमालय मुकुट की तरह सुशोभित है और उनके चरणों को रत्नाकर (समुद्र) धोता है। यहाँ महेंद्र, मलय, विन्ध्य, अरावली जैसे पर्वत और गंगा, यमुना, सरस्वती, सिंधु, ब्रह्मपुत्र जैसी पवित्र नदियाँ बहती हैं, जो जीवनदायिनी माताओं की तरह हैं। भारतभूमि में अयोध्या, मथुरा, काशी, सोमनाथ और अमृतसर जैसे पवित्र तीर्थस्थल हैं, जहाँ असंख्य लोग विभिन्न स्थानों से आकर श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

पाठ में भारत के राष्ट्रीय ध्वज का वर्णन है, जिसमें केसरिया, श्वेत और हरे रंग का महत्व बताया गया है—केसरिया त्याग और शौर्य का, हरा कृषि और समृद्धि का तथा श्वेत शांति और सत्य का प्रतीक है। ध्वज में स्थित नीले धर्म चक्र में चौबीस तीलियाँ हैं, जो निरंतरता, कर्मशीलता और सतत् प्रयास का संदेश देती हैं। अंततः यह पाठ हमें भारतमाता का गौरव बढ़ाने और उनकी वंदना करने के लिए प्रेरित करता है और बच्चों में देशभक्ति का भाव जाग्रत करता है।

मूलपाठस्य अवबोधनम्

(मूल पाठ, शब्दार्थ, सरलार्थ और पठितावबोधनम्)

वार्तालाप

(क) अम्ब! वयं विभिन्नेषु कार्यक्रमेषु, आकाशवाण्यां, शालायां च 'वन्दे मातरम्' इति गीतं बहुत्र शृणुमः। किन्तु अस्य अर्थं न जानीमः। मातः! अस्य कः अर्थः?

'इदं गीतं कः लिखितवान्' इत्यपि मम जिज्ञासा अस्ति।

वत्सौ! महान् देशभक्तः बङ्किमचन्द्रः चट्टोपाध्यायः १८८२ तमे वर्षे 'आनन्दमठः' इति नामकम् उपन्यासं लिखितवान्। 'वन्दे मातरम्' इति गीतं तस्मिन् एव उपन्यासे वर्तते। 'वन्दे मातरम्' इत्यस्य अर्थः अस्ति यत् 'अहं मातुः वन्दनं करोमि' इति।

मातः! इदं गीतं कस्यां भाषायाम् अस्ति?

पुत्रि! एतत् गीतं संस्कृतं बाङ्ग्ला च इति भाषाद्वये वर्तते।

मातः! अस्मिन् गीते वर्ण्यः विषयः कः अस्ति?

पुत्र! अस्मिन् गीते भारतमातुः स्वरूपस्य रम्यं वर्णनम् अस्ति। (पृष्ठ 1)

सरलार्थ—माँ! हम विभिन्न कार्यक्रमों में, आकाशवाणी पर और विद्यालय में, 'वन्दे मातरम्' यह गीत कई जगहों पर सुनते हैं, लेकिन इसका अर्थ हम नहीं जानते। माँ! इसका क्या अर्थ है?

'यह गीत किसने लिखा है?' यह भी मेरी जानने की इच्छा है।

बच्चो! महान देशभक्त बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने सन् 1882 ई. में 'आनन्दमठ' नामक उपन्यास लिखा। 'वन्दे मातरम्' उसी उपन्यास में है। वन्दे मातरम् का अर्थ है 'मैं माँ का वंदन करता हूँ' या मातृभूमि को प्रणाम करता हूँ।

माँ! यह गीत किस भाषा में है?

बेटी! यह गीत संस्कृत और बांग्ला—इन दो भाषाओं में है।

माँ! इस गीत में वर्णित विषय क्या है?

बेटे! इस गीत में भारतमाता के स्वरूप का सुंदर वर्णन है।

(ख) **अम्ब! एतस्य गीतस्य किं वैशिष्ट्यम्?**

बालौ! स्वतन्त्रतायाः आन्दोलने सर्वे देशभक्ताः एतत् गीतं मन्त्रम् इव गायन्ति स्म। सम्प्रति अपि इदं गीतं श्रुत्वा गीत्वा च वयं सर्वे भारतीयाः प्रेरिताः भवामः।

मातः! 'वन्दे मातरम्' इति गीतस्य अर्थः इतिहासः च कियान् महान् अस्ति खलु!

अम्ब! आवाम् अस्माकं राष्ट्रध्वजस्य विषये अपि किञ्चित् ज्ञातुम् इच्छावः।

साधु, अधुना वयं भारतमातुः त्रिवर्णध्वजस्य च विषये जानीमः। (पृष्ठ 3)

सरलार्थ—माँ! इस गीत की क्या विशेषता है?

बच्चो! स्वतंत्रता आंदोलन में सभी देशभक्त इस गीत को मंत्र की तरह गाते थे। आज भी इस गीत को सुनकर और गाकर हम सभी भारतीय प्रेरित होते हैं।

माँ! 'वन्दे मातरम्' इस गीत का अर्थ और इतिहास कितना महान है न!

माँ! हम दोनों अपने राष्ट्रीयध्वज के विषय में भी कुछ जानना चाहते हैं।

शाबाश! अब हम भारतमाता और उसके तिरंगे ध्वज के बारे में जानते हैं।

(1)

एषा अस्माकं वत्सला भारतमाता। अहो अस्माकं भारतमातुः माहात्म्यम्! साक्षात् पर्वतराजः हिमालयः मुकुटरूपेण अस्याः मस्तके शोभते। अस्याः चरणौ प्रक्षालयति स्वयं रत्नाकरः समुद्रः। भारतभूमौ महेन्द्रः, मलयः, सह्यः, रैवतकः, विन्ध्यः, अरावलिः इत्यादयः श्रेष्ठाः पर्वताः विराजन्ते। अत्रैव गङ्गा, यमुना, सरस्वती, सिन्धुः, ब्रह्मपुत्रः, गण्डकी, महानदी, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी इत्यादयः पवित्राः नद्यः प्रवहन्ति। नद्यः अपि अस्माकं मातरः इव। (पृष्ठ 3)

कठिन-शब्दार्थाः—वत्सला = स्नेहमयी (affectionate)। **माहात्मयम्** = महिमा (greatness)। **साक्षात्** = प्रत्यक्ष रूप से (mainfestly)। **प्रक्षालयति** = पखारता है (washes)। **रत्नाकरः** = रत्नों का भंडार (treasure of gemes)। **अत्रैव** = यहीं पर (right here)।

सरलार्थ—यह हमारी प्रिय भारत माता है। अहा! हमारी भारतमाता की कितनी महान महिमा है। स्वयं पर्वतराज हिमालय इनके मस्तक पर मुकुट के रूप में शोभायमान हैं। स्वयं रत्नाकर (समुद्र) इनके चरणों को धोता है। भारत भूमि में महेन्द्र, मलय, सह्य, रैवतक, विंध्य, अरावली आदि श्रेष्ठ पर्वत शृंखलाएँ विराजमान हैं। यहीं पर गंगा, यमुना, सरस्वती, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, गंडकी, महानदी, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि पवित्र नदियाँ बहती हैं। ये नदियाँ भी हमारी माता के समान हैं।

पठितावबोधनम्—

निर्देशः—उपर्युक्तं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत।

(उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए।)

प्रश्नाः—I. एकपदेन उत्तरत—

(i) कः वत्सलः अस्ति?

(ii) कः चरणौ प्रक्षलयति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

भारतमातुः मस्तके कः मुकुटरूपेण शोभते?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत—

(i) भारतभूमौ के के पर्वताः विराजन्ते?

(अ) सह्यः एव (ब) हिमालयः एव

(स) महेन्द्रः, मलयः, सह्यः, रैवतकः, विन्ध्यः, अरावलिः

(द) केवलं विन्ध्यः

(ii) के के पवित्राः नद्य भारतभूमौ प्रवहन्ति?

(अ) गङ्गा एव (ब) गोदावरी एव

(स) यमुनाः एव

(द) गङ्गा, यमुनाः, सरस्वती, सिन्धुः, ब्रह्मपुत्रः, गण्डकी, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी

(iii) कः भारतमातायाः मस्तके मुकुटरूपेण शोभते?

(अ) विन्ध्यः (ब) सह्यः (स) अरावलिः (द) हिमालयः

उत्तराणि— I. (i) भारतमाता (ii) रत्नाकरः

II. भारतमातुः मस्तके हिमालयः मुकुटरूपेण शोभते।

III. (i) (स) महेन्द्रः, मलयः, सह्यः, रैवतकः, विन्ध्यः, अरावलिः

(ii) (द) गङ्गा, यमुनाः, सरस्वती, सिन्धुः, ब्रह्मपुत्रः, गण्डकी, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी

(iii) (द) हिमालयः

(2)

अयोध्या, मथुरा, हरिद्वारम्, काशी, काञ्ची, अवन्तिका, वैशाली, द्वारिका, पुरी, गया, प्रयागः, पाटलीपुत्रं, विजयनगरम्, इन्द्रप्रस्थं, सोमनाथः, अमृतसरः इत्यादीनि मङ्गलानि तीर्थक्षेत्राणि नगराणि च भारतभूमौ एव सुशोभन्ते। एतेषां तीर्थक्षेत्राणां धूलिं ललाटे स्थापयितुं विविधेभ्यः प्रदेशेभ्यः असंख्याः जनाः आगच्छन्ति। (पृष्ठ 3)

कठिन-शब्दार्थाः—धूलिं = धूल (dust)। **स्थापयितुं** = स्थापित करने के लिए (to place)। **विविधेभ्यः प्रदेशेभ्यः** = विभिन्न क्षेत्रों से (from various regions)। **असंख्याः जनाः** = असंख्य लोग (countless people)।

सरलार्थ—अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, काञ्ची, अवन्तिका, वैशाली, द्वारिका, पुरी, गया, प्रयाग, पाटलीपुत्र, विजयनगर, इन्द्रप्रस्थ, सोमनाथ, अमृतसर आदि पवित्र तीर्थस्थल और नगर भारत भूमि पर ही स्थित हैं। इन तीर्थस्थलों की पवित्र धूल को अपने ललाट पर लगाने के लिए असंख्य लोग विभिन्न स्थानों से यहाँ आते हैं।

पठितावबोधनम्—

प्रश्नाः—I. एकपदेन उत्तरत—

(i) अयोध्या कुत्र: अस्ति?

(ii) के नगराणि भारतभूमौ सुशोभन्ते?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

जना: कुत्र धूलिं स्थापयन्ति?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत—

(i) तीर्थक्षेत्राणां धूलिं जना: कुत्र स्थापयन्ति?

(अ) चरणयो: (ब) हस्तयो: (स) वक्ष: स्थले (द) ललाटे

(ii) तीर्थक्षेत्राणां दर्शनार्थं जना: कुत्रत: आगच्छन्ति?

(अ) विदेशात् (ब) केवल उत्तरभारतात्

(स) विविधेभ्य: प्रदेशेभ्य: (द) केवल दक्षिणभारतात्

(iii) जना: कस्मात् आगच्छन्ति?

(अ) तीर्थक्षेत्रेषु वासाय (ब) तीर्थक्षेत्राणां धूलिं ललाटे स्थापयितुं

(स) पर्यटनार्थम् (द) व्यायामं कर्तुं

उत्तराणि— I. (i) भारतभूमौ (ii) मङ्गलानि

II. जना: ललाटे तीर्थक्षेत्राणां धूलिं स्थापयन्ति।

III. (i) (द) ललाटे (ii) (स) विविधेभ्य: प्रदेशेभ्य:

(iii) (ब) तीर्थक्षेत्राणां धूलिं ललाटे स्थापयितुं

(3)

भारतमातु: हस्ते विलसति त्रिवर्णयुत: राष्ट्रध्वज:। अहो अस्य शोभा! अस्मिन् राष्ट्रध्वजे केशर:, श्वेत:, हरित: च वर्णा: विराजन्ते। ध्वजस्य मध्ये सुन्दरं नीलवर्णं चक्रमपि शोभते। ध्वजे विराजमाना: वर्णा: चक्रं च विशिष्टं सन्देशं प्रयच्छन्ति। (पृष्ठ 4)

कठिन-शब्दार्था:—हस्ते = हाथ में (in the hand)। **विलसति** = चमकता है (shines)। **त्रिवर्णयुत:** = तीन रंगों से युक्त (composed of three colours)। **केशर:** = केसरी रंग (saffron)। **विशिष्टम्** = विशेष (special)।

सरलार्थ— भारत माता के हाथ में त्रिवर्ण (केसरिया, सफेद और हरा) से युक्त राष्ट्रीय ध्वज झिलमिलाता हुआ दिखाई देता है। यह ध्वज बहुत सुंदर है, जिसमें केसरिया, सफेद और हरा रंग विराजमान हैं। ध्वज के मध्य में सुंदर नीला चक्र भी दिखाई देता है। ध्वज के रंग और चक्र एक विशेष संदेश को व्यक्त करते हैं।

पठितावबोधनम्—

प्रश्नाः—I. एकपदेन उत्तरत—

(i) क: भारतमातु: हस्ते विलसति?

(ii) कति वर्णा: राष्ट्रध्वजे सन्ति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

किम् राष्ट्रध्वजस्य मध्ये शोभते?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत—

(i) राष्ट्रध्वज: के वर्णा: के के सन्ति?

(अ) नील:, पाटल:, कृष्ण (ब) शुक्ल:, कृष्ण:, पीत:

(स) केसर:, श्वेत:, हरित: (द) धूम्र:, हरित:, रक्त: